

किसानों पर आंसू गैस बरसाना तानाशाह शासक के अंहकार का प्रतीक : कांग्रेस

खबर मन्त्र व्यूह

रांची। कांग्रेस ने देश के अननदाताओं पर मोदी सरकार द्वारा दमकारी नीतियों का उजर्जा विरोध किया है। किसानों पर बरसाए जा रहे आंसू गैस को पार्टी ने तानाशाह शासक के अंहकार में डबने का प्रतीक माना है। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शर्मित ने कहा कि मोदी सरकार पार्ट-2 भीषण अन्याय काल का गवाह है। देश के युवा वर्ग, नरी, किसान के अलावा समाज का अन्य तबका भी यात्रा की मांग कर हाई है, लेकिन केंद्र सरकार कान में ठालकर सो रही है। मोदी सरकार के इसी अन्याय विवादपर राहुल गांधी द्वारा भारत जोड़ो न्याय

झारखण्ड में होनेवाले दूसरे चरण की न्याय यात्रा में राहुल गांधी नहीं होंगे शामिल

यात्रा किया जा रहा है। जिससे समाज में जन जागरण का अभियान चल रहा है।

कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शर्मित ने कहा है कि एक तरफ अपने लिए न्याय की मांग कर रहे किसानों पर दमनपूर्वक कार्रवाई की जा रही है, तो दूसरी तरफ मोदी इन सबको नन्दनअंदेज कर रहे हैं। एक तानाशाह शासक की न्याय यात्रा की किसानों के अंदरावाह तरह मोदी ने उनके दान की कार्रवाई को देखते हुए कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी शामिल नहीं रहेंगे।

झारखण्ड सरकार, गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग झारखण्ड आन्दोलनकारी विहितीकरण आयोग

63वीं औपचारिक सूची जिला-खेती

क्रमांक	आनंदनकारी की विवरणी	गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग, झारखण्ड, राजीव ने संकल्प रसीदी-1938, दिनांक-20.04.2021 के अनुसार दिया गया वर्णन लिया
1.	आवेदन नं.-09 / 24	कालिका-2(ix)
2.	आवेदक-स्थान कुटुंब, वित्त-स्थान किया गया।	कालिका-2(ix)
3.	ग्राम-मैदान, पोर्ट-कोने, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता	कालिका-2(ix)
4.	लिंग-पुरुष, आयु-74 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।	कालिका-2(ix)
5.	आवेदन नं.-10 / 24	कालिका-2(ix)
6.	आवेदक-स्थान कुटुंब, वित्त-स्थान किया गया।	कालिका-2(ix)
7.	ग्राम-काला मुखिया, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता	कालिका-2(ix)
8.	लिंग-महिला, आयु-53 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।	कालिका-2(ix)
9.	आवेदक-स्थान कुटुंब, वित्त-स्थान किया गया।	कालिका-2(ix)
10.	ग्राम-काला मुखिया, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता	कालिका-2(ix)
11.	लिंग-महिला, आयु-56 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।	कालिका-2(ix)
12.	आवेदक-स्थान कुटुंब, वित्त-स्थान किया गया।	कालिका-2(ix)
13.	ग्राम-काला मुखिया, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता	कालिका-2(ix)
14.	लिंग-महिला, आयु-62 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-काला में तील का दान।	कालिका-2(ix)
15.	आवेदन नं.-13 / 24	कालिका-2(ix)
16.	आवेदक-स्थान कुटुंब, वित्त-स्थान किया गया।	कालिका-2(ix)
17.	ग्राम-काला मुखिया, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता	कालिका-2(ix)
18.	लिंग-पुरुष, आयु-48 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ का अंगुला का दान।	कालिका-2(ix)
19.	आवेदन नं.-14 / 24	कालिका-2(ix)
20.	आवेदक-स्थान कुटुंब, वित्त-स्थान किया गया।	कालिका-2(ix)
21.	ग्राम-काला मुखिया, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता	कालिका-2(ix)
22.	लिंग-पुरुष, आयु-52 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ का अंगुला का दान।	कालिका-2(ix)
23.	आवेदक-स्थान कुटुंब, वित्त-स्थान किया गया।	कालिका-2(ix)
24.	आवेदन नं.-15 / 24	कालिका-2(ix)
25.	आवेदक-स्थान कुटुंब, वित्त-स्थान किया गया।	कालिका-2(ix)
26.	ग्राम-काला मुखिया, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता	कालिका-2(ix)
27.	लिंग-पुरुष, आयु-44 / 24	कालिका-2(ix)
28.	आवेदक-स्थान कुटुंब, वित्त-स्थान किया गया।	कालिका-2(ix)
29.	ग्राम-काला मुखिया, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता	कालिका-2(ix)
30.	लिंग-पुरुष, आयु-46 / 24	कालिका-2(ix)

विवरण :- विनिष्ठ झारखण्ड आन्दोलनकारी सोनाल द्वारा दूसरे चरण की न्याय यात्रा के माननीय सदर्य के सम्बन्ध दिये गये वर्णन लिया

पहाड़ान के अन्याय।

1. आवेदन नं.-01 / 24

2. आवेदक-हमारी कुटुंब, पति-जेवियर मिश्न

3. ग्राम-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

4. लिंग-महिला, आयु-43 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-द्वारीनी का दान।

5. आवेदन नं.-02 / 24

6. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

7. लिंग-पुरुष, आयु-52 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-द्वारीनी का दान।

8. आवेदन नं.-03 / 24

9. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

10. लिंग-पुरुष, आयु-41 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।

11. आवेदन नं.-04 / 24

12. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

13. लिंग-पुरुष, आयु-49 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।

14. आवेदन नं.-05 / 24

15. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

16. लिंग-पुरुष, आयु-57 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-जेकिंस नहीं।

17. आवेदन नं.-06 / 24

18. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

19. लिंग-पुरुष, आयु-41 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।

20. आवेदन नं.-07 / 24

21. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

22. लिंग-पुरुष, आयु-50 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।

23. आवेदन नं.-08 / 24

24. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

25. लिंग-पुरुष, आयु-43 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-द्वारीनी का दान।

26. आवेदन नं.-09 / 24

27. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

28. लिंग-पुरुष, आयु-50 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।

29. आवेदन नं.-10 / 24

30. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

31. लिंग-पुरुष, आयु-44 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-जेकिंस नहीं।

32. आवेदन नं.-11 / 24

33. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

34. लिंग-पुरुष, आयु-52 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।

35. आवेदन नं.-12 / 24

36. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

37. लिंग-पुरुष, आयु-47 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।

38. आवेदन नं.-13 / 24

39. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

40. लिंग-पुरुष, आयु-55 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।

41. आवेदन नं.-14 / 24

42. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

43. लिंग-पुरुष, आयु-53 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये हाथ में तील का दान।

44. आवेदन नं.-15 / 24

45. आवेदक-माला, पोर्ट-विन्हान, धाना-कर्ता, प्रखण्ड-कर्ता

46. लिंग-पुरुष, आयु-51 वर्ष, पहाड़ान विन्ह-बाये ह

वसंत के शब्दशिल्पी महाप्राण **निराला**

A close-up photograph of a woman's face. She has dark, wavy hair and is wearing a large, shiny gold hoop earring. Her eyes are dark and expressive, looking directly at the camera. The lighting is soft, highlighting her features against a blurred background.

अलण कुमार दवे

तुराज वसंत का आगमन हो चुका
है। मधुरिमा, सरसता एवं हरीतिमा
से सुसज्जित धरा के कण कण में
सौन्दर्य प्रस्फुटित हो रहा है। प्राणवंत
प्रकृति का लावण्य चुरुदिक निखर
उठा है। वसंत ने सारी सृष्टि में मधुर संगीत भरा
दिया है। वन उपवन कोयल की कूक से
आळादित हो रहे हैं। रंग और सुगंध से
सराबर वसंत के आगमन पर रसप्लावित
धरित्री संगीतमय हो झूम रही है। जब जब
वसंत ऋशु आती है तब तब हिन्दी साहित्य
सिक्कों की चेतना में महाप्राण कवि सूर्यकान्त
त्रिपाठी निराला की ये पक्षियां गूंजने लगती हैं
सखि, वसंत आया।

भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया।

किसलय-वसना नव-वय लातिका
मिली मधुर प्रिय-उर तरु पतिका

मधुप-वृद्ध बंदी
पिक-स्वर नभ सरसाया ।

वसंत ऋतु निराला की धड़कनों में बसती थी ।
निराला ने 'हिंडी' के सुमनों के प्रति पत्र'
कविता में लिखा भी है ज़ा मैं ही वसन्त का
अग्रदूत । वसंत पर निराला ने श्रेष्ठतम गीत
लेखे हैं । घनघोर अभावों का सामना करने के
बावजूद उनकी चेतना में वसंत की महक
वैद्यमान रही । अपने अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य
से सबको सम्मोहित करती वसंत ऋतु के
समान ही निराला ने अपनी अनुपम कविताओं
से हिंडी साहित्य जगत को सम्मोहित किया ।

वसंत पंचमी के साथ महाकवि निराला का
अप्रतिम लगाव था । वाणी के वरद पुत्र
कविवर 'निराला का जन्मदिन भी वसंत
पंचमी को ही मनाया जाता है' उनका जन्म
विसे तो माघ शुक्ल एकादशी, संवत् 1955
तदनुसार इक्कीस फरवरी 1899 ई. को हुआ
था, लेकिन उन्होंने स्वेच्छा से वसंत पंचमी को
अपना जन्म दिन घोषित किया था । 1930 ई.
में गंगा पुस्तकमाला के प्रकाशक दुलारे लाल
भार्गव ने वसंत पंचमी के दिन गंगा
पुस्तकमाला का महोत्सव और अपना जन्मदिन
मनाया था । इस अवसर पर निराला ने भी
एक निबंध पढ़ा । डॉ. रामविलास शर्मा बताते हैं
कि उन्होंने देखा कि दुलारेलाल भार्गव वसंत
पंचमी को अपना जन्मदिवस मनाते हैं । उन्होंने
नेश्यर किया कि वह भी वसंत पंचमी को ही
पैदा हुए थे । वसंत पंचमी सरस्वती पूजा का
दिन, निराला सरस्वती के वरद पुत्र, वसंत
पंचमी को न पैदा होते तो कब पैदा होते?
नामकरण संस्कार से लेकर जन्मविवाह तक
निराला ने अपना जन्मपत्र नए सिरे से लिख
डाला हूँ भाग्य के लेख को बदलने की कवि
की इस अद्भुत जिद के कारण ही गंगा
प्रसाद पांडेय ने 'निराला' को महाप्राण
कहा था ।

वहां पाया।
 वसंत के जितने मोहक काव्य चित्र
 निराला ने प्रस्तुत किये हैं उतने शायद ही
 किसी ने किये हो। वसंत अपने पूरे रंग
 वैभव के साथ उनकी गीतों में नज़र
 आता है। वसंत में धरती पग-पग रंग
 जाती है; वृक्षों के अंतस की लालिमा
 निखर जाती है। वसंत की सुषमा का
 यह अनूठा चित्र दृष्टव्य है

रंग गई पग-पग धन्य धरा
 हुड़ जग जगमग मनोहरा।

बण गंध धर, मधु-मरन्द भर
 तरु उर की अरुणिमा तरुणतर
 खुली रूप कलियाँ में पर भर
 सत-स्तर सपरिसग।

गूंज उठा पिक-पावन पंचम
खुग-कुल-कलरव मृदुल मनोरम,
सुख के भय कांपती प्रणय-क्लम
वन श्री चारुतरा।

सुष्ठि के कण-कण में छिपा सौंदर्य वसंत
के रंग-बिरंगे फूलों के भीतर प्रस्फुटित हो उठा
है। ऐसा लगता है मानो फूलों के चेहरों पर

कृष्ण ने गीता में वसंत को अपना लगाना कैसा था?

वसंत का उत्सव प्रकृति की पूजा का उत्सव है। सदैव सुंदर दिखने वाली प्रकृति वसंत ऋग्में सोलह कलाओं में दीप्त हो उठती है। योवन हमारे जीवन का मधुमास वसंत है तो वसंत इस सृष्टि का यौवन।

मानव को अपने स्वास्थ्य और जीवन के सौंदर्य के लिए प्रकृति के अनुपम सान्निध्य में जाना चाहिए। निसर्ग में ऐसा जादू है कि मानव की वह समस्त वेदनाओं को तत्काल भुला देता है। निसर्ग का सान्निध्य यदि सदैव प्राप्त होता रहे तो मानव जीवन पर उसका प्रभाव बहुत ही

गहरा होता है। निर्सर्ग में अहंकार नहीं है। अत वह प्रभु के अत्यधिक निकट है। इस कारण निर्सर्ग के सानिध्य में जाने पर हम भी स्वयं को प्रभु के अधिक निकट महसूस करते हैं।

सुख-दुख के समस्त
द्वंद्वों से परे है - निर्सग।
वसंत हो या वर्षा, अलग-
अलग रूपों में प्रभु का हाथ
सुष्ठि पर फिरता ही रहता है
और सम्पूर्ण निर्सग प्रभु के स्पर्श से निखर उठता है

जीवन में भी यदि प्रभु का स्पर्श हो तो सम्पूर्ण
जीवन ही बदल जाता है। जीवन में वसंत
खिल उठेगा, जीवन के दुख, दैन्य, सब
क्षण भर में दूर हो जाएंगे। प्रभु स्पर्श
जीवन में नियंतर एक ही ऋगु का
साम्राज्य होता है और वह मादक
ऋग है वसंत।

न्यु है पता:

कूची फिरा दी गई हो
 कूची तुम्हारी फिरी कानन में
 फूलों के आनन आनन में
 फूटे रंग वासंती, गुलाबी,
 लाल पलास, लिए सुख, स्वाबी,
 नील, श्रेत शतदल सर के जल,
 चमके हैं केशर पंचानन में।
 वसन्त में जब कोयल बोलती है तो उसके

स्वर की मादकता हमारी नस नस
 में घुल जाती है। प्राणों के भीतर
 अनहंदनाद गुंजरित होने लगता है।
 कवि लिखता है

कुंज-कुंज कोयल बोली है,
 स्वर की मादकता घोली है।
 कांपा है धन पलव्र-कानन,
 गूँजी गुहा श्रवण-उन्मादन,
 तन सहज छादन-आच्छादन,
 नस ने रस-वशता तोली है।
 स्नेह से सिचित करने वाली ऋतु है
 सन्त। इसके आगमन मात्र से हमारी रगों में
 लक्ष्यस का संचार होने लगता है। रसोद्रेक का
 त्वकरिक प्रभाव प्रकृति में इस प्रकार
 अस्थित दोनों लगता है।

फिर बेले में कलियाँ आईं।
डालों की अलियां मुस्काई।
संचे बिना रहे जो जीते,
स्फीत हुए सहसा रस पीते
नस-नस दौड़ गई हैं खुशियां
नैहर की कलियाँ लहराई।
कवि जीवन भर अभावों के भीषण
ता रुदा सारा जीवन में लीते कल्प

ता रहा मगर जापन में बात कुछ वास्तव कर वह परिवाहन बनता है।

श्रृंगार, रहा जो निराकार,
रस कविता में उच्छ्वसित धार
गाया स्वर्णीय प्रिया-संग-
भरता प्राणों में रग झर रंग,
रति रूप प्राप्त कर रहा वही,
आकाश बदलकर बना मही।
उनकी अनेक कविताओं में वस
थिष्ठात्री देवी सरस्वती का स्तवन
। सरस्वती की आराधना करके
र्थकता प्रदान करने वाले निराला
सरस्वती और वसंत दोनों समे हुए
राला की कविता वसंत के संदर्भ
सरस्वती के रस रूप की उपासना है
घ ने लिखा था- क्षणे-क्षणे यन्हें
देव रूपं स्मारीताय ॥। वसंत ३४५

नव रव नव विहगवासी! वसंत आर तरत्तु
नें ही पल प्रतिपल नवीनता के द्योतक हैं
नव गति, नव लय, ताल छंद नव
नवल कंठ, नव जलद मंद्र रव;
नव नभ के नव विहग-वृद्ध को
नव पर नव स्वर दे!

मां शारदा का वसंत पर अतिशय
नुराग है। वसंत की सुसज्जित माला धारण
र वह वरदायिनी बनती है।

‘अणिमा’, ‘बेला’, ‘नए पत्ते’,
‘गीत कुंज’, ‘आराधना’, ‘सांध्य-
काकली’, ‘अपरा’ जैसे काव्य-
संग्रहों रचना की। ‘अप्सरा’,
‘अलका’, ‘प्रभावती’,
‘निरूपमा’, ‘कुल्ली भाट’ और
‘बिल्लेसुर’ ‘बकरिहा’ शीर्षक से
उपन्यासों तथा ‘लिली’, ‘चतुरी
चमार’, ‘सुकुल की बीवी’, ‘सखी’
और ‘देवी’ नामक कहानी संग्रहों का
सृजन किया। ‘मतवाला’ व
‘समन्वय’ पत्रिकाओं का संपादन भी
किया। सौ पढ़ों में लिखी गई
तुलसीदास निराला की सबसे बड़ी
कृतिन है।

निराला का साहित्य प्रकृति सौंदर्य, प्रेम के औदात्य, आध्यात्मिकता, राष्ट्रप्रेम, सामाजिक चेतना एवं मानवीय संवेदना से सराबोर है साहित्य जगत को अपनी अविस्मरणीय रचनाओं से वसंत का अहसास कराने वाले इस महाप्राण कवि का व्यक्तिगत जीवन अभावों एवं कष्टों से भरा रहा मगर बेबाकी एवं फक्कड़पन से भरा यह कवि समझौताप्रस्त नहीं बना। ठिठुराती सर्दी में एक असहाय वृद्ध के मुख से बेटा का संबोधन सुनकर अपनी नई रजाई उसे ओढ़ा देने वाला हिन्दी का यह कवि सिहासन तक को ठोकर मारने का जज्बा रखता था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के यशस्वी वाइस चांसलर अमरनाथ झा ने एक बार निराला को अंग्रेजी में पत्र लिखकर अपने घर पर काव्य पाठ के लिए निर्माणित किया। शिक्षा, संस्कृति और प्रशासकीय सेवाओं के क्षेत्र में अमरनाथ झा की तूटी बोलती थी। मगर स्वाभिमानी निराला सरीखे कवि को यह गवारा न था कि पद या सम्पन्नता के गुमान में कवि दरबार आयोजित करने वाले प्रभावशाली व्यक्ति के घर हाजरी बजाकर भाँडवत काव्यपाठ करें। उन्होंने जवाब भेजा ज्ञा ह्लाई एम रिच ऑफ माई पुअर इंग्लिश, आई वाज ऑनर्ड बाई योइ इनविटेशन टू रिसाइट माई पोयम्स एट योर हाउस। हाउ एवर मोर आनर्ड आई विल फील इफ यू कम टू माई हाउस टू लिसिन टू माई पोयम्स ह्लू (मैं गरीब अंग्रेजी का धनिक हूँ। आपने मुझे अपने घर आकर कविता सुनाने का निमंत्रण दिया मैं गैरवान्वित हुआ। लेकिन मैं और अधिक गैरव का अनुभव करूँगा यह। आप मेरे घर आकर मेरी कविता सुनें) ह्लू इस प्रकार एक बार ओरछा नरेश से अपना परिचय देते हुए निराला ने कहा, ह्लूम वो हैं जिनके बाप-दादों की पालकी आपके बाप-दादा उठाते थे ह्लू यहाँ कवि परंपरा पर गर्व करने वाले निराला ने उस घटना का संकेत किया था, जब राजा छत्रसाल ने कवि भूषण की पालकी स्कर्यं उड़ा ली थी।

का पालका स्वयं उठा ला या
जीवनर्पन साहित्य झ़रसिकों को
वासन्ती शब्दसुमनों से रसप्तावित करने वाले
शब्दशिल्पी निराला के जीवन में मात्र 22 वर्ष
की अल्पायु में पती के चिरवियोग से पतझड़
आ गया और उसके बाद बिट्या सरोज के
असामायिक निधन से यह पतझड़ स्थाई बन
गया। दुर्दत दुर्भाग्य के प्रबल
प्रहरों को झेलते झेलते
आखिर शोक संतप्त
निराला की

मनोदेशा
व्यथा
एवं वेदना
से टूट-सी गई
और 15 अक्टूबर,
1961 को यह अमर
कवि इस लोक से विदा हो
जाए।

निराला वाकई निराला ही थे
 उनकी स्मृति आते ही हमारे
 चित्त में वसंत की सुरभि और
 सौंदर्य मूर्तिमान हो उठते हैं।
 हमारा अंतस्त स्वत ? ही
 गुणगुनाने लगता है।
 अभी न होगा मेरा अंत,
 अभी अभी ही तो आया है,
 मेरे बन में मुड़ुल वसंत,
 अभी न होगा मेरा अंत
 (जन्म दिन वसंत पंच
 पार तिथि



क्षणों को भूल नहीं पता है। कवि के जीवन में वसन्त की मधुरिमा लेकर पहले तो उनकी सहचरी मनोहरा देवी आई, बाद में लाडली बिटिया सरोज वसन्तवत आई। कवि की ये वासंती स्मृतियाँ ‘सरोज-स्मृति’ कविता में इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है।

देखा मैंने, वह मूर्ति धीति
मेरे वसंत की पथम गोति-

